

राष्ट्रपिता को रोते देखा

नर्मदाप्रसाद खरे

राष्ट्र-पिता को रोते देखा

•

नर्मदा प्रसाद खरे

लोकचेतना प्रकाशन, जबलपुर

द्वितीय संस्करण : १९७१
राष्ट्र-पिता को रोते देखा :
●
कवि : नर्मदा प्रसाद खरे :
●
लोकचेतना प्रकाशन जबलपुर
द्वारा प्रकाशित :
●
इलाहाबाद प्रेस, इलाहाबाद
द्वारा मुद्रित :

मूल्य : दो रुपये

पूज्य श्री पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी

को

जिनकी सरलता, सत्यनिष्ठा और साधना ने
मुझे सदा बापू का पुण्य स्मरण कराया।

—यह और कहना है

सुभद्रा जी ने कभी लिखा था—'है कलम बँधी स्वच्छन्द नहीं।' आज कवि इस परवशता से मुक्त है। 'मुक्त गगन है, मुक्त धरा है, मुक्त राष्ट्र की वाणी।'

ज्वारित प्राणों के छंद हैं ये। इनमें जहाँ अन्तर्ज्वाला के अग्नि-स्फुलिंग हैं, वहाँ अन्तश्चेतना के चंदन की शीतलता भी।

गांधी-जन्म-शती का मैं मन-प्राण से अत्यन्त कृतज्ञ हूँ। वही इन रचनाओं की प्रेरणा-बिन्दु है। एकाएक जिस तेजी से गाँधी के नाम की आँधी उठी, उसने हर संवेदनशील व्यक्ति के हृदय को उद्वेलित किया और गंभीरता से सोचने-विचारने को बाध्य भी। गाँधी के साथ-साथ, गाँधी के सपनों के देश और गाँधी-भक्तों का स्मरण हो आना, स्वाभाविक ही था।

मुझे जो कहना था, बिना किसी पूर्वाग्रह के मैंने इन कविताओं के माध्यम से कह दिया है। संग्रह का नाम जान-बूझकर, 'राष्ट्र-पिता को रोते देखा' दिया, जिससे रचनाओं के मूल स्वर से अपने-आप प्रगाढ़ परिचय हो जाये। मेरे कवि ने कभी किसी वाद विशेष का झंडा नहीं उठाया। अतः इन रचनाओं में भी मुझे 'गाँधीवादी कवि' समझने की भूल न की जाय। मैंने एक भी पंक्ति सायास नहीं लिखी। जिस क्षण कलम की आग में ठंडेपन का अहसास हुआ, उसी क्षण मैंने लिखना बंद कर दिया। इसीलिए मात्र इक्कीस रचनायें ही हो सकीं।

श्रद्धेय चच्चा (श्री रामानुजलाल श्रीवास्तव) ने सर्वप्रथम इन रचनाओं को पढ़ा, सराहा और अमूल्य सुझाव भी दिये। किन शब्दों में उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करूँ? उनका यह प्रसाद और आशीर्वचन तो मैं सदा से पाता रहा हूँ।

पूज्य मास्टर जी (डा० पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी) का सादा जीवन और गांधी-सा सरल व्यक्तित्व मुझे सदा बापू का स्मरण कराता रहा है। इसीलिए बापू पर लिखी ये कवितायें हिन्दी-संसार के बापू को समर्पित कर रहा हूँ।

—नर्मदा प्रसाद खरे

प्रथम पंक्तियाँ

•

जब पहली बार उसे देखा

•

जब पहली बार उसे देखा—
ममता की बदली बरस गयी, प्राणों का पंछी चहक उठा।

अभ्यागत अपनी झोली में, आशीर्वचन भर लाया था।
देवत्व मनुजता में बसने जैसे पृथ्वी पर आया था।
पल भर में दूरी दूर हुई, अपनत्व सहज ही फूल गया।
आनन्द-सिन्धु में डूबा मैं, अपनी ही सुध-बुध भूल गया।
वाणी से अनगिन फूल झरे, मन का हर कोना महक उठा।

साकार सौम्यता ही जैसे उस दिन धरती पर उतरी थी।
मस्तक पर तेज दमकता था, मुख पर पावनता बिखरी थी।
मानवता ही उस दिन जैसे जीवन की व्याख्या करती थी।
नयनों से नेह बरसता था, अधरों से करुणा झरती थी।
उल्लसित सहज मन-प्राण हुए, जीवन का प्याला छलक उठा।

उस दिन जब मैंने चरण छुए, गल गया अहं पल
जल गया स्वयँ ही अंधकार, किरणों ने हँस मुझको
वह ज्योति-पुरुष हँसते-गाते, कुछ जादू-सा कर देता था।
अपनी ज्योतित मुसकानों से, अंतर का तम हर लेता था।
उस दिन मेरा फिर जन्म हुआ, कालुष्य-भरा मन दमक उठा।

देखा, वह अधनंगा फकीर, दुनिया की खैर माँगता है।
उन्मुक्त हृदय, पावन मन से, दुनिया को प्यार बाँटता है।
जीवन का सच्चा कलाकार, जीने की कला जानता है।
जीवन के शाश्वत मूल्यों का, अवमूल्यन नहीं मानता है।
जीवन का उच्च शिखर छूने, मेरा बौना मन ललक उठा।

•

मेरे मन का राम खो गया !

•

राजघाट के जन-समूह में
मेरे मन का राम खो गया !

यह समाधि है, प्रेम-प्रीति की,
यह समाधि है, न्याय-नीति की,
यहाँ सदा बाती जलती है—
अक्षय, पावन दिव्य ज्योति की।
शान्ति-सभा की भीड़-भाड़ में,
दीनबन्धु घनश्याम खो गया।

यह समाधि है, देश-प्रेम की,
यह समाधि है, कुशल-क्षेम की,

यहाँ सदा आभा रहती है—
विश्व-धर्म की, सत्य-नेम की।
गाँधी-भक्तों की हलचल से,
हाय! व्यर्थ बदनाम हो गया।

यह समाधि है, पावनता की,
यह समाधि है, मानवता की,
यहाँ आँख भर-भर आती है—
उद्धत, निर्मम दानवता की।
श्रद्धा-सुमन चढ़ाने से ही
बड़े-बड़ों का नाम हो गया!

यह समाधि है, सदाचार की,
यह समाधि है, चिर-उदार की,
यहाँ मौन करुणा सोती है—
सच्चे साधक कलाकार की।
जन्म-शती के आयोजन से
एक और शुभ काम हो गया!

•

बापू कहते—

•

बापू कहते—'मेरा जीवन ही मेरा संदेश है।'

अन्तर बाह्य एक-से दोनों, सीधा-सच्चा रूप था।
श्रद्धा जिसे नमन करती थी, पावन दिव्य स्वरूप था।
कर्मशीलता में निष्ठा थी—जीवन खुली किताब थी,
जिसके एक-एक अक्षर में, एक अनोखी आब थी।
मानव में देवत्व देखते, बड़े गर्व से बोलते—
'मानवता ही गीता मेरी, ईश्वर मेरा देश है।'

आशा भरी दृष्टि से जिसको, सारी सृष्टि निहारती।
सत्यनिष्ठता की पावनता, जिसके पाँव पखारती।

अपराजित प्राणों की वंशी जीवन-गीत सँवारती,
अंतस की अनुराग-अरुणिमा, भू पर स्वर्ग उतारती।
प्रेम-पगी कल्याणी वाणी, जैसे अमृत घोलती—
'सकल विश्व में प्राण बसे हैं, भारत हृदय-प्रदेश है।'

चिर-उदार, कर्तव्यपरायण, जिसके दोनों हाथ थे।
पैरों से तूफान बँधे थे, प्रण प्राणों के साथ थे।
मातृभूमि पर मर मिटने की, तीव्र लगन थी, साध थी।
पौरुष पर विश्वास जिसे था, कायरता अपराध थी।
स्वप्न सत्य हो जाने पर भी, मन में भारी क्लेश था;
'पराधीनता भस्म हो गयी, फूट अभी भी शेष है!'

जीवन, नाम समर्पण का ही, गीत बनो बलिदान के।
सारा विश्व भुजाओं में लो, मीत बनो इंसान के।
कर्म स्वयं व्याख्यायित होते, दीन-हीन श्रीमान के।
गान स्वयं ही गुंजित होते, आन-बान, ईमान के।
राम-रहीम, बुद्ध-ईसा को अब भी तो पहचान लो;
नई रोशनी घर आई है, बदल गया परिवेश है।'

•

बापू सदा कहा करते थे

•

बापू सदा कहा करते थे—
मैं कोई अवतार नहीं हूँ।

एक फूल हूँ फुलवारी का, किसी समय भी झर सकता हूँ।
एक घरौंदा हूँ बालू का, किसी समय भी गिर सकता हूँ।
मुझको मिट्टी की काया से, कोई खास लगाव नहीं है,
और देवता बनने का तो मुझको बिलकुल चाव नहीं है।
तुम झूठा देवत्व लाद कर, मनचाहे वरदान न माँगो,

कण-कण को आप्लावित कर दूँ,
मैं वह पारावार नहीं हूँ।

जीवन, एक गीत अति प्यारा, तन्मयता से गाते जाओ।
उसके छन्द-शब्द-गति-लय में, मन का राग मिलाते जाओ।

अधर किसी दिन काम न देंगे, वाणी पर विश्वास न है।
कर्म तुम्हारे साथ रहेंगे, दूजा कोई पास न है।
ऐसी तान सुना जाओ तुम, जिसको कण्ठ-कण्ठ दुहराये,

जो सारे दुख-ताप मिटा दे,
ऐसी मलय-बयार नहीं हूँ।

ऐसा दर्पण बनो कि जिसमें सब अपना प्रतिबिम्ब निहारें।
क्या थे, क्या बन गये भ्रष्ट हो, सच्चे मन से सदा विचारें।
सुमन-सुमन रहते हैं जग में, काँटों में मुसकाया करते।
घृणित, अपावन राहों पर भी मधु-पराग बिखराया करते।
निर्मल मन के स्नेह-प्यार से, चिरानन्द के दीप जलाओ,

घर-घर में स्वर्णिम सुख भर दूँ,
वह अक्षय भण्डार नहीं हूँ।

चाहे जितना लम्बा पथ हो, कटते-कटते कट जाता है।
महानिशा का अंधकार भी, छँटते-छँटते छँट जाता है।
तूफानों से मुँह मत मोड़ो, प्राणों में विश्वास जगाओ।
अग्नि-पंथ पर चरण बढ़ा कर, स्वयं लक्ष्य को पास बुलाओ।
भाग्य भरोसे जीने वाले, कभी न कुछ कर पाते जग में,

सकल विश्व को पार लगा दे,
मैं ऐसी पतवार नहीं हूँ।

•

गौतम-गाँधी के देश में

•

हम को निर्वासित कर दो तुम,
जा बसें, दूर परदेश में!

मस्जिद का खुदा न रोता है,
मन्दिर का शिव भी सोता है,
मानवता का दम घुटता है,
गौतम-गाँधी के देश में

काँटे ही काँटे राहों में,
अदृश्य सर्प हैं बाँहों में,
मन का मुहरा ही पिटता है,
गौतम-गाँधी के देश में।

फूले हैं फूल अभावों के,
विकृतियों और तनावों के।
ईमान नित्य ही लुटता है,
गौतम-गाँधी के देश में।

सब गंध उड़ गयी फूलों की,
खेती हो रही बबूलों की,
अंधेर सब तरफ बँटता है,
गौतम गाँधी के देश में।

इंसान न कुछ कर पाता है,
शैतान पनपता जाता है।
सिर के बल मनुज घिसटता है,
गौतम-गाँधी के देश में।

●

बापू, तुमको भूल रहे हम !

●

बापू, तुमको भूल रहे हम !
चौराहों पर मूर्ति खड़ी कर, गर्वोन्नत हो, फूल रहे हम !

आजादी का बिरवा फूला,
माली ही आश्वासन भूला,
काँटे दिये, फूल कब बाँटे,
हर कोना है आगबबूला।
टूटे सपनों के झूलों पर, बड़े गर्व से भूल रहे हम !

आत्म-ज्योति में जलने वाले,
स्वयं अकेले चलने वाले,
अन्यायों का शीश कुचलने,
अपने-आप मचलने वाले,
राज-घाट पर फूल न पाये, विष से बुझे त्रिशूल रहे हम !

३

रामराज्य का स्वप्न अधूरा,
कभी न कर पायेंगे पूरा,
मस्जिद में पड़ गयीं दरारें,
मन्दिर का हिल रहा कँगूरा,
अपने-आप फँसे कीचड़ में, मंजिल के प्रतिकूल रहे हम !

नित्य नयी संज्ञायें पायीं,
नयी-नयी राहें अपनायीं,
भूल गये सब मंत्र तुम्हारे,
गलत उक्तियाँ ही दुहरायीं।
अनासक्तमय मंगल-पथ के, बोलो, कब अनुकूल रहे हम ?

●

दूर तुम से हो रहे हम

●

अब न तुम से बात होती,
अब न वह बरसात होती,
याद की आँखें भरी हैं,
प्राण रोते, प्रीति रोती।
देवता तुम को बना कर,
विस्मरण में खो रहे हम !

अब न तुम बाँहें बढ़ाते,
पास आ, उर से लगाते,
बढ़ गयी दूरी अपरिमित,
दूर बैठे गुनगुनाते।
शंख-ध्वनि नभ में गुँजा कर,
मौन साधे, सो रहे हम !

हृदय के सम्बन्ध टूटे ,
नेह - नाते सभी छूटे ,
हो गया सब कुछ बिराना ,
शेष हैं बस बेल - बूटे ।
मन्दिरों में कैद हो तुम ,
द्वार पर ही रो रहे हम ।

अब न तुम कुछ बोलते हो ,
न तो उर ही खोलते हो ,
छाँह भी हम छू न पाते ,
नयन में ही डोलते हो ।
अश्रु के दाने धरा पर ,
गीत गा - गा बो रहे हम ।

बढ़ गयी प्रभुता तुम्हारी ,
द्वार पर है भीड़ भारी ,
अब न तुम तक पहुँच पाते ,
हो रही दुर्गति हमारी ।
भार गुरुता का तुम्हारा ,
आँख मीचे, ढो रहे हम ।

•

बापू की हत्या करते हैं

•

सिरफिरे एक दीवाने ने सीने पर गोली दागी थी ,
ईमान बेच कर प्रतिदिन हम, बापू की हत्या करते हैं !

उस राष्ट्र पिता को एक दिवस, चिर-निद्रा में सोना ही था ।
संपूर्ण समर्पित जीवन को, अमरत्व प्राप्त होना ही था ।
वह देव नहीं था—मानव था, मानवता उसकी गीता थी ,
नफरत का दाग शहादत से, चुपचाप उसे धोना ही था ।
सपनों का सत्य बनाने के, अरमान न पूरे हो पाये—
अरमान बेच कर प्रतिदिन हम, बापू की हत्या करते हैं !

सत्याग्रह के बल पर जिसने संगीनों को ललकारा था ।
गौतम, पैगम्बर, ईसा को जिसने हर बार पुकारा था ।
पथ-भ्रष्ट हुए, भूले-भटके, खुद बिके, स्वप्न भी बेच दिये—
नाविक हा! उसको भूल गये, जो दिग्दर्शक ध्रुवतारा था ।

सुख-साधन, वंदन अभिनन्दन, उच्चासन-शासन के लोभी—
मन-प्राण बेच कर प्रतिदिन हम, बापू की हत्या करते हैं!

वह प्यार भरे दो बोलों से अमृत के घूँट पिलाता था।
जन-जन के हृदय सरोवर में करुणा के कमल खिलाता था।
निष्कर्म कर्म में रत रहता, सम्मानों को ठुकराता था।
यश चरण चूमता था उसके, बिन-माँगे पूजा पाता था।
गोबर-गणेश को गौरव दे, सम्मानित होने की धुन में—
सम्मान बेच कर प्रतिदिन हम, बापू की हत्या करते हैं!

सत्तापूजक श्रीमानों को भगवान बेचते देखा है।
सेवा के ठेकेदारों को मन-प्राण बेचते देखा है।
सत्ता का लोभ न गाँधी को पथ-भ्रष्ट कभी कर पाया था,
गाँधी-भक्तों को खड़े-खड़े, ईमान बेचते देखा है।
सत्ताचारी के चरणों पर मस्तक अपना धरने वाले—
निज मान बेच कर प्रतिदिन हम, बापू की हत्या करते हैं!

●

मत गाँधी को बदनाम करो

●

मत गाँधी को बदनाम करो।

पत्थर की मूरत पर कब तक, कागज के फूल चढ़ाओगे?
बलिदानी गाथा गा-गा कर अपना सम्मान बढ़ाओगे?
इस झूठे पूजन-वंदन से, बापू की आत्मा रोती है—
सच्चे अर्थों में मनुज बनो, सच्चे मन से कुछ काम करो।
—मत गाँधी को बदनाम करो।

गाँधी की त्याग-तपस्या के कब तक झंडे फहराओगे ?
बंदी-जीवन, सत्याग्रह के, कब तक आख्यान सुनाओगे ?
अनशन, आंदोलन, भाषण से, रोटी के कमल न खिल सकते,
समता का सूरज चमका कर, भारत का उज्ज्वल नाम करो।
—मत गाँधी को बदनाम करो!

नित नये मुखौटे धारण कर, कब तक सिंहासन पाओगे ?
उजली खादी से सज-धज कर, कब तक नेता कहलाओगे ?
तुम राजकीय सम्मान सहित, मत अपनी अर्थी उठवाओ—
ईमान बहुत पहले बेचा; मत राष्ट्र-धर्म नीलाम करो!
—मत गाँधी को बदनाम करो।

•

गाँधी का कुछ तो काम करो

•

गाँधी का कुछ तो काम करो—
अन्याय, अनीति, अमङ्गल से, निर्भय जूझो, संग्राम करो।

चुपचाप कष्ट सब सहते हैं,
अपनी बीती कब कहते हैं ?
जीवन की आपाधापी में—
दिन-रात फँसे सब रहते हैं।
दलितों में प्रभु की छवि देखो, दीनों को नित् प्रणाम करो।
—गाँधी का कुछ तो काम करो।

सब के मनचाहे नारे हैं,
उर में जलते अंगारे हैं,

सब के मन में है चोर कहीं—
दिल में पड़ गयी दरारें हैं।
अदृश्य भयानक दुश्मन को, निस्तेज करो, नाकाम करो।
—गाँधी का कुछ तो काम करो।

कुछ डूबे हुए सितारे हैं,
कुछ ढहते हुए किनारे हैं,
काले नागों से डसे हुए,
कुछ बिना मौत के मारे हैं।
फन कुचलो विकट भुजंगों के, दाढ़ें उनकी बेकाम करो।
—गाँधी का कुछ तो काम करो।

सब ओर कँटीले घेरे हैं,
मुँह बाये खड़े अँधेरे हैं,
सूरज है कैद कुहासे में,
पहरे पर सहज लुटेरे हैं,
इन झूठे पहरेदारों को, चौराहों पर नीलाम करो।
—गाँधी का कुछ तो काम करो॥

●

गाँधी ज्योतिर्मय जीवन था

●

सूरज को दीप दिखाने से
कर्त्तव्य न पूरा हो जाता।

सूरज आलोक लुटाता है,
तन का अस्तित्व मिटाता है,
हम भी हँस कर तम पी जायें,
सच्चे अर्थों में जी जायें,
केवल गुण-गौरव गाने से
कर्त्तव्य न पूरा हो जाता।

जलना ही जिसका धर्म रहा,
शोले बोना ही कर्म रहा,

हम भी मुसका कर जलें सदा,
अंगारों पर हँस चलें सदा,
सपनों के महल उठाने से
कर्त्तव्य न पूरा हो जाता।

मिट्टी में जीवन बोता है,
धरती के स्वप्न संजोता है,
किरणों की बाँहें पकड़ चलें,
जीवन से उनको जकड़ चलें,
केवल जय-गान गुँजाने से
कर्त्तव्य न पूरा हो जाता।

गाँधी ज्योतिर्मय जीवन था,
सूरज था, सत्य-निकेतन था।
उसके पथ पर ही चलें सदा,
किरनीलेपन में पलें सदा,
गाँधीवादी बन जाने से
कर्त्तव्य न पूरा हो जाता।

•

मन्दिर के द्वार न खोल सके

•

बापू के बड़े समर्थक भी
मन्दिर के द्वार न खोल सके।

नित नयी झाँकियाँ सजती हैं,
नित नयी घंटियाँ बजती हैं,
बगुला-भक्तों के हाथों से—
नित अगरबत्तियाँ जलती हैं।
सिद्धान्त चढ़ा कर सूली पर
हम मौन खड़े हैं, बिके-बिके!

मानव-मानव में भेद नहीं,
हर बात पुरानी वेद नहीं,
सच्चा भगवान हृदय में है—
इसमें कोई मतभेद नहीं।

मुख मोड़ा सदा उजेलों से—
दिग्भ्रमित, अँधेरों में भटके।

कुछ मन्दिर टूटे-फूटे हैं,
कुछ मन्दिर बड़े अनूठे हैं,
सब का भगवान एक-सा है,
हम आपस में क्यों रूठे हैं?
दुतकारा दीन-अनाथों को—
वे दूर खड़े हैं, झुके-झुके!

भगवान मनुज में बसता है,
भगवान मनुज में हँसता है,
दलितों को हृदय लगाने से
उसका मन-कमल विकसता है।
हम कब उसको पहचान सके?
रह गये अधर में ही लटके!

हम प्यार न अब तक बाँट सके!

हम प्यार न अब तक बाँट सके!

मन में कुंठित अभिलाषा है,
बदली-बदली-सी भाषा है,
जीवन जीने की अलग-अलग—
सब की अपनी परिभाषा है।
अन्तर्मन की विष बेलों को
जड़ से न अभी तक छाँट सके।

सोचा था, बाग लगायेंगे,
मनचाहे फूल उगायेंगे,
मिट्टी में ही दीमक निकली,
तब महक कहाँ से लायेंगे?

धरती की फटी दरारों को
फूलों से क्या हम पाट सके ?

कोई न किसी से छोटा है ,
जो छोटा माने, खोटा है ,
हर मोर यहाँ का दुबला है—
हर सर्प यहाँ का मोटा है।
छप्पर पर बैठी चीलों के
डैने न अभी तक काट सके।

घुन लगा हुआ है बीजों में ,
कंकड़ खाने की चीजों में ,
सब ओर अँधेरा हँसता है—
हलुआ बँट रहा भतीजों में !
आक्रोश न मन में कभी जगा ,
खुल कर न किसी को डाँट सके।

•

बापू के लाखों बेटों को

•

बापू के लाखों बेटों को
घुट-घुट मरने का शाप मिला।

इन चलती-फिरती लाशों को ,
इन तथाकथित बदमाशों को ,
नफरत की आँखों से देखा ,
डाँटा-फटकारा, दुतकारा।
जीने का पुण्य न प्राप्त हुआ—
अपमान, उपेक्षा, पाप मिला।

नित नये सींग ही उगे यहाँ ,
नित कड़ुए फल ही लगे यहाँ ,
हर कली यहाँ की नागफनी—
हर फूल दहकता अंगारा।

चंदा न चाँदनी दे पाया,
जलते सूरज का ताप मिला।

जीवन से ऊबे-ऊबे हैं,
आकंठ घुटन में डूबे हैं,
हर साँस उखड़ती-सी लगती,
हर क्षण लगता है हत्यारा।
ओंठों पर हँसी न फूट सकी,
बस, रोने का अभिशाप मिला!

गाली खाते, विष पीते हैं,
केवल कहने को जीते हैं,
घनघोर अँधेरे में डूबे—
हो गये स्वयँ ही आवारा।
जीने का संबल न पा सके,
संत्रास और संताप मिला।

•

शिकायत : बापू से

•

हे बापू! हे जग के त्राता!
हे भारत के भाग्य-विधाता!
चाहे इसे शिकायत समझो,
बड़े मजे की बात सुनाता।

कोई हरिजन बाग लगाये,
सुन्दर-सुन्दर फूल खिलाये,
किसी तरह से उन्हें बेच कर—
रूखी-सूखी रोटी खाये।
अन्य उन्हें प्रभु-चरण चढ़ाते,
वह बेचारा चढ़ा न पाता!

ढोल-मृदंग बनाने वाला,
नीच-चमार कहाने वाला,
निर्मल मन, एकाग्र चित्त से—
ईश्वर के गुण गाने वाला,
वही ढोल मन्दिर में बजते,
पर वह सीढ़ी लाँघ न पाता।

प्रभु की मूरत गढ़ने वाला,
श्रम की गीता पढ़ने वाला,
पाषाणों में प्राण फूँक कर—
उन्हें कला से मढ़ने वाला,
प्राण-प्रतिष्ठा होते ही क्यों
मन्दिर के बाहर रह जाता?

•

रोते बापू के बंदर

•

रोते बापू के बन्दर।

एकाकी सिर धुनते रहते, बैठे कुटिया के अन्दर,
कभी बने थे जो गुरुवर।

चिरपरिचित वे ही मुद्रायें—नयन बंद है मूक अधर,
दोनों कर हैं कानों पर।

घोर उपेक्षा-अपमानों का, पीना पड़ता सदा जहर,
घुटता रहता उर-अंतर।

उच्चासन जिनने पाया था, जिन्हें मिले बापू के वर ,
उजड़ गया उनका ही घर !

बापू के गुण गुनते रहते, मुग्ध मगन हो ठहर-ठहर ,
आँखों में आँसू भर-भर ।

जो प्रतीक थे आदर्शों के, काँप रहे हैं थर-थर-थर !
देख-देख कर आडम्बर ।

भूल गये सब सीख पुरानी, बदल गया भक्तों का स्वर ।
शेष बचा केवल खद्दर ।

रोते बापू के बन्दर ।

•

बापू के नाम एक पत्र

•

बापू पत्र तुम्हें लिखता हूँ, पढ़ कर परेशान मत होना ।
यों तो यहाँ बहुत कुछ बदला, मगर नहीं कुछ भी अनहोना ।
जन्म-शती की शुभ घड़ियों में, सर्वप्रथम मेरा प्रणाम लो ।
बहुत दिनों से तुम्हें न देखा, दर्शन दो, फिर हाथ थाम लो ।
तुम्हें देखने को ये आँखें, जाने कब से तरस रही हैं ।
यादों में डूबा-डूबा मन, आँखें क्षण-क्षण बरस रही है ।
यों तो अगणित बन्धु सखा हैं, बहिनों की भी कमी नहीं है ।
नेह नदी की निर्मल धारा, कभी किसी क्षण थमी नहीं है ।
जी भर सभी प्यार करते हैं, हिल-मिल गले लगाया करते ।
दुखी-हताश देख कर मुझको, धीरज सदा बँधाया करते ।
किन्तु तुम्हारे बिना हे बापू ! लगता जैसे मैं अनाथ हूँ ।
मनचाहा कुछ किया न जाता, जैसे टूटा हुआ हाथ हूँ ।

गीले नयन देख कर माँ के, हृदय सदा भर-भर आता है।
मन का सब उत्साह सहज ही जीर्ण पत्र-सा झर जाता है।
अब न उमङ्गों के वे झूले, और न आशा की अमराई।
कुंठाओं का जाल बिछा है, विपदाओं की गहरी खाई।
वह लाठी, हम जिसे पकड़ कर, बड़ी ठसक से आगे बढ़ते।
जिसका सदा सहारा लेकर, उच्च शिखर पर निर्भय चढ़ते।
आज उपेक्षित, धूल चाटती, धीरे-धीरे टूट रही है।
उसकी ममतामयी चमक भी, धीरे-धीरे छूट रही है।
तुमने जो पौधा रोपा था, अब तो खासा बड़ा हो गया।
तरह-तरह की शाखें फूटीं, और तना भी कड़ा हो गया।
अनगिन चिकने प्यारे पत्ते, खुली हवा में डोल रहे हैं।
लहक-लहक उठते हैं हर क्षण, बिन बोले ही बोल रहे हैं।
फूलों से हर डाल लदी है, फूलों से वह झूल रहा है।
जैसे प्यार तुम्हारा ही तो, हँसता-गाता फूल रहा है।
पर जो गंध तुम्हें प्यारी थी, वैसी उनमें गंध नहीं है।
काँटे भी उगते आते हैं, उन पर अब प्रतिबन्ध नहीं है।
जैसा वातावरण चाहिए, वैसा वातावरण कहाँ है?
प्राण-प्राण को सुरभित कर दे, वैसा शुभ आचरण कहाँ है?
यही देख मन रो उठता याद तुम्हारी सदा सताती।
और आज मैं दुखी हृदय से, भेज रहा हूँ तुमको पाती।

•

कैसे बापू के गुण गायें ?

•

कलुषित मन, संकीर्ण हृदय ले,
कैसे बापू के गुण गायें?

दया-प्रेम के पंख जला कर,
मानवता को जहर पिला कर,
सत्य-अहिंसा की छाती में
तेज विषैले छुरे चला कर,
नफरत की काँटों की माला
कैसे राजघाट ले जायें?

माना, अगणित फूल चढ़े हैं,
कुछ छोटे, कुछ बहुत बड़े हैं!
तन के उजले, मन के काले,
कपट-भक्ति से मौन खड़े हैं।

ऐसे भक्तों की टोली में
कैसे अपना नाम लिखायें ?

हमने पावन चरण छुए थे ,
चरण परस हम अभय हुए थे ,
बरबस हृदय उमड़ आया था—
करुणा-विगलित नयन चुए थे।
भूल चुके किरनीली राहें ,
कैसे मंजिल पास बुलायें ?

जिन हाथों ने 'राम' लिखा था ,
'दीन-बंधु घनश्याम' लिखा था ,
बापू के चरणों में जिनने
श्रद्धा-सहित प्रणाम लिखा था ,
वही हाथ अब रक्त-रँगे हैं ,
कैसे श्रद्धा-सुमन चढ़ायें ?

●

जी, पक्का गाँधीवादी हूँ !

●

हिंसा से मुझको नफ़रत है,
पर मुर्ग-मुसल्लम खाता हूँ।
मदिरा-निषेध पर भाषण दे,
पूरी बोतल पी जाता हूँ।
जो कहता हूँ, करता न कभी,
केवल गुरु-मंत्र सिखाता हूँ।
बंदी-जीवन, तप-त्यागों की,
हर बार कथा दुहराता हूँ।
जनता का बहुत बड़ा सेवक,
भाषण देने का आदी हूँ।

गाँधी की अद्भुत आँधी ने,
प्राणों में ज्वार जगाया था।
गाँधी का एक सिपाही बन,
जनता के सम्मुख आया था।
गाँधी का भक्त आज भी हूँ,
'सेवा के चेक' भुनाता हूँ।
गाँधी की भस्म लपेटे हूँ,
मनमाना चंदा पाता हूँ।
कलुषित तन-मन ढँकने वाली
मैं उजली मोटी खादी हूँ।

युग बदला, मैं भी बदल गया,
सेवा से नाता टूट गया।
आदर्शों का दर्पण जैसे,
मेरे ही हाथों फूट गया।
खद्दर के वस्त्र पहिनता हूँ,
पर चरखा कभी न छूता हूँ।
गाँधी के जीवन-दर्शन से
मैं अब भी परम अछूता हूँ!
गाँधी-भक्तों के जीवन की
चलती-फिरती बर्बादी हूँ।

●

गाँधी के घर गाँधी आया।

●

गाँधी के घर गाँधी आया।
जीर्ण-शीर्ण अपनी झोली में, जाने कितनी मणियाँ लाया।
पाने की कुछ चाह न मन में,
केवल प्यार लुटाने आया।
बहुत बड़ा उस पर जो ऋण था,
ब्याज सहित लौटाने आया।
गाँधी की गीता ही जैसे
राजघाट पर गाने आया।
तिमिराच्छन्न क्षितिज पर जैसे
दिव्य प्रकाश जगाने आया।
गंगा में नव-जीवन जागा, यमुना की लहरों ने गाया।
गाँधी के घर गाँधी आया।
वही सौम्यता, वही दिव्यता,
जैसे फिर धरती पर आई।
करुणा ही साकार कि जैसे
आँखों में करुणा भर लाई।

बोल उट्ठे अतीत के पन्ने,
मूर्त हुआ इतिहास पुराना।
वाणी वही, स्वरूप वही है,
सब कुछ युग-युग का पहचाना।
मुरझाये फूलों के मुख पर, मानो फिर माधव मुसकाया।
गाँधी के घर गाँधी आया।

मन में एक अपार हर्ष है,
किन्तु नयन हैं गीले-गीले।
वही बाग है, वही फूल हैं,
किन्तु पत्र हैं पीले-पीले।
स्वप्न सत्य हो गया, ठीक है,
प्रजातंत्र का मात्र नाम है।
उसको ऐसा लगा कि अब भी
बापू का भारत गुलाम है।
गाँधी ने गाँधी को जैसे, अपना आहत हृदय दिखाया।
गाँधी के घर गाँधी आया।

बोला—जो बापू को भूले,
वे क्या मेरी बात सुनेंगे?
भूल चुके बापू की बातें,
वे क्या मेरी बात गुनेंगे?
मानवता का दुश्मन बन कर
राष्ट्र न उन्नत हो सकता है।
मात्र एकता के ही बल पर
सुख की किरणें बो सकता है।
गांधी-भक्तों को गाँधी ने अन्तर्मन का मर्म बताया।
गाँधी के घर गाँधी आया।

•

राष्ट्र-पिता को रोते देखा !

●

मैंने उस दिन राजघाट पर, राष्ट्रपिता को रोते देखा !

वह बापू, जिसने कटुता की, गिन-गिन हिंसक दाढ़ें तोड़ीं,
उच्च लक्ष्य की ओर अकेले, जिसने सारी राहें मोड़ीं;
प्राणों की बाजी पर जिसने, केवल सदा एकता चाही—
जन-जन में सद्भाव जगाते, जिसने अंतिम साँसें छोड़ीं,
रक्त-रँगी नफरत की चादर, गीली आँखों धोते देखा !
मैंने उस दिन राजघाट पर, राष्ट्रपिता को रोते देखा !

वह बापू, जिसने जीवन में ऊँच-नीच का भेद न जाना,
दीनों में प्रभु-मूरत देखी, धनियों को श्रीमान् न माना,
युग बदला, शासन भी बदला, छुआ-छूत की हवा न बदली—
चूर हुई सारी आशायें, हाथ लगा केवल पछताना,
कुष्ठ-गलित पीड़ित हरिजन को, अपने काँधों ढोते देखा !
मैंने उस दिन राजघाट पर, राष्ट्रपिता को रोते देखा !

वह बापू जिसके इंगित पर कोटि-कोटि पग रुक जाते थे,
जिसके सम्मुख सहज प्रेमवश, कोटि-कोटि सिर झुक जाते थे,
जिसके दर्दीले बोलों पर, करुणा-सागर लहरा उठते—
जिसके गीले नयन देखकर, कोटि-कोटि दृग भर आते थे,
ऐसे सौम्य संत के मन को, अति उद्वेलित होते देखा!
मैंने उस दिन राजघाट पर, राष्ट्रपिता को रोते देखा!

वह बापू, जिसने जीवन भर, मानवता का मंत्र पढ़ा था,
दानवता का शीश कुचलने, एक अनोखा मंत्र गढ़ा था,
सत्याग्रह के बल पर निर्भय जिसने सदा मरण को न्यौता–
तूफानों के बीच कि जिसका और अधिक विश्वास बढ़ा था,
ऐसे धीर-वीर को अपना साहस-संबल खोते देखा!
मैंने उस दिन राजघाट पर, राष्ट्रपिता को रोते देखा!

वह बापू, जिसने सूरज से, सदा एक-सा जलना सीखा,
दोनों हाथ प्रकाश लुटा कर, जग का रंग बदलना सीखा,
जिसके आत्म-तेज ने युग के अंधकार का अंतर चीरा—
जिसने किरणों की बाँहों में, सब जग को ले चलना सीखा,
हिंसा-घृणा-द्वेष के तम में, दिव्य प्रकाश सँजोते देखा!
मैंने उस दिन राजघाट पर, राष्ट्रपिता को रोते देखा!

